NEERAJ®

हिंदी
गद्य साहित्य

B.H.D.C.-134

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain* **M.A. (Hindi), B.Ed.**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

हिंदी गद्य साहित्य

Question Paper–June-2024 (Solved) 1-2
Question Paper–December-2023 (Solved) 1-2
Question Paper–June-2023 (Solved) 1-4
Question Paper–December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

हिंदी गद्य का स्वरूप और विकास

1. हिंदी गद्य का विकास 1

2. हिंदी गद्य की विविध विधाएं 12

हिंदी उपन्यास एवं कहानी

3. जैनेन्द्र कुमार और उनका उपन्यास साहित्य 25

4. 'त्यागपत्र' की अंतर्वस्तु और विश्लेषण 35

5. 'नमक का दारोगा' का वाचन 48

6. 'नमक का दारोगा' की कथावस्तु और विश्लेषण 58

7. 'आकाशदीप' का वाचन 71

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

8. 'आकाशदीप' की अंतर्वस्तु और विश्लेषण 82

9. 'वापसी' (उषा प्रियंवदा) : वाचन 94

10. 'वापसी' कहानी की कथावस्तु और मूल्यांकन 102

हिंदी निबंध

11. रामचंद्र शुक्ल और उनका निबंध साहित्य 109

12. 'लोभ और प्रीति' की अंतर्वस्तु और विश्लेषण 116

13. हजारी प्रसाद द्विवेदी और उनके निबंध 126

14. 'कुटज' की अंतर्वस्तु और विश्लेषण 134

15. 'सहस्र फणों का मणि-द्वीप' (कुबेरनाथ राय) की अंतर्वस्तु और विश्लेषण 145

■ ■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

हिंदी गद्य साहित्य **B.H.D.C.-134**

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) तुझसे ही वह सहायता न लूँगी तो किससे लूँगी। लेकिन सहायता का हाथ देकर क्या मुझे यहां से उठाकर ऊँचे वर्ग में जा बिठाने की इच्छा है तो भाई, मुझे माफ कर दो। वैसी मेरी अभिलाषा नहीं है। सहायता मुझे इसलिए चाहिए कि मेरा मन पक्का होता रहे कि कोई मुझे कुचले, तो भी मैं कुचली न जाऊँ और इतनी जीवित रहूँ कि उसके पाप के बोझ को भी ले लूँ और सबके लिए क्षमा की प्रार्थना करूँ।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश जैनेंद्र के उपन्यास 'त्यागपत्र' से लिया गया है। जब मृणाल बस्ती में रह रही होती है, तो प्रमोद उसे लेने जाता है और सहायता का आश्वासन देता है। उस समय मृणाल प्रमोद से अपने विचार प्रकट करती है।

व्याख्या–प्रमोद द्वारा बुआ मृणाल की मदद करने के संदर्भ में मृणाल प्रमोद से कहती है कि तू मेरा अपना है और मैं सहायता की आवश्यकता होने पर तुझसे ही सहायता माँगूँगी, किंतु इस समय समाज में तेरी प्रतिष्ठा है और तू मुझे सहायता देकर अपने समान समाज में प्रतिष्ठा दिलाना चाहता है, तो यह मुझे स्वीकार नहीं है, मुझे सहायता केवल इसलिए चाहिए कि जब समाज में कोई मेरा शोषण करने या मुझ पर अत्याचार करे तो मैं निश्चिंत रहूँ और उस अत्याचार, शोषण या पाप को सहन कर सभी को क्षमा करने की ईश्वर से प्रार्थना कर सकूँ।

विशेष–1. प्रमोद और मृणाल के आत्मीय संबंध की झलक है।

2. मृणाल की संघर्ष करने की शक्ति का परिचय है।

3. भाषा भावपूर्ण एवं विचारात्मक है।

(ख) ऐसा काम ढूँढ़ना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है, ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी में उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, उसी से उसकी बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान हो तुम्हें क्या समझाऊँ। इस विषय में विवेक को बड़ी आवश्यकता है।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-69, व्याख्या-2

(ग) गजाधार बाबू बैठे हुए पत्नी को देखते रह गए। यही थी क्या उनकी पत्नी, जिसके हाथों के कोमल स्पर्श, जिसकी मुस्कान की याद में उन्होंने संपूर्ण जीवन काट दिया था? उन्हें लगा कि वह लावण्यमयी युवती जीवन की राह में कहीं खो गई और उसकी जगह आज जो स्त्री है, वह उसके मन और प्राणों के लिए नितांत अपरिचिता है। गाढ़ी नींद में डूबी उनकी पत्नी का भारी-सा शरीर बहुत बेडौल और कुरूप लग रहा था, चेहरा श्रीहीन और रूखा था।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-98, व्याख्या-2

(घ) एक लोभ से दूसरे लोभ का निवारण भी होता है जिससे लोभी में अन्य वस्तुओं के त्याग का साहस आता है। विशेष विषय-गत लोभ यदि बहुत प्रबल और सच्चा हुआ तो लोभी के त्याग का विस्तार बहुत बड़ा होता है। लोभ तो उसे एक विशेष और निर्दिष्ट वस्तु से है, अतः उसके अतिरिक्त अन्य अनेक वस्तुओं का त्याग वह उसके लिए कर सकता है।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश रामचंद्र शुक्ल के 'चिंतामणि' में संगृहीत निबंध 'लोभ और प्रीति' से लिया गया है। इसमें लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है कि लोभ केवल तृष्णा का कारण नहीं है, अपितु यह त्याग का कारण भी बन सकता है, यह इस पर निर्भर करता है कि वह लोभ किसके प्रति है।

व्याख्या–लेखक कहते हैं कि लोभ केवल व्यक्ति को गिराता नहीं है। यदि व्यक्ति के मन में किसी एक के प्रति लोभ की जगह दूसरी वस्तु का लोभ आ जाए तो पहला लोभ समाप्त हो जाता है। ऐसा होने पर लोभी व्यक्ति एक वस्तु, व्यक्ति या अन्य किसी के प्रति लोभ प्रबल होने पर अन्य सभी वस्तुओं का लोभ त्याग सकता है, जैसे देश के लिए कुछ करने का लोभ होने पर व्यक्ति धन और पद के लोभ का त्याग कर सकता है। इससे लोभी के त्याग का दायरा बढ़ जाता है। क्योंकि लोभी का लोभ किसी विशिष्ट के प्रति होता है और वह उसे पूरा करने के लिए सभी दूसरे लोभ सहर्ष त्याग देता है।

विशेष–1. भाषा विचारात्मक एवं गंभीर है।

2. लोभ की वृत्ति किस प्रकार व्यक्ति को त्यागी एवं महान बना सकती है, इसका वर्णन है।

प्रश्न 2. हिन्दी उपन्यास का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उपन्यास के तत्वों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-13, 'उपन्यास', पृष्ठ-20, प्रश्न 1

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्रश्न 3. जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों का परिचय दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-26, 'जैनेन्द्र के उपन्यास'

प्रश्न 4. 'नमक का दारोगा' के परिवेश और संरचना-शिल्प का विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-62, 'कहानी का परिवेश', 'संरचना-शिल्प'

प्रश्न 5. 'चम्पा' की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-84, 'चंपा का चरित्र'

प्रश्न 6. 'लोभ और प्रीति' निबंध के वैचारिक पक्ष का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-116, 'परिचय'

इसे भी देखें–शुक्ल जी ने 'लोभ और प्रीति' में अपने विचारों को प्रस्तुत करते हुए निबंध का प्रारंभ लोभ की परिभाषा से किया है। उनके अनुसार लोभ सुख देने वाली वस्तु के अभाव की भावना आने पर उसकी प्राप्ति अथवा रक्षा की इच्छा का जागना। प्रीति की परिभाषा बताते हुए कहते हैं, ''विशिष्ट वस्तु या व्यक्ति के प्रति होने पर लोभ वह सात्विक रूप प्राप्त करता है, जिसे प्रीति या प्रेम कहते हैं।" लोभ और प्रीति में अंतर बताते हुए कहा है कि लोभ सामान्य के प्रति (धन, जमीन, संपत्ति आदि से) जुड़ा है और प्रीति विशेष के प्रति अर्थात किसी विशिष्ट से होता है। उनका है कि लोभ के प्रति एकनिष्ठ वृत्ति प्रेम में बदल जाती।

लोभ का एक रूप अच्छा लगता है, किंतु वस्तु को प्राप्त करने अथवा अपने से दूर न होने देने, नष्ट न होने देने का भाव आने पर ही लोभ का रूप धारण करता है।

शुक्ल जी ने वर्गीकरण पद्धति अपनाकर प्रिय वस्तु को प्राप्ति या पास रखना और दूर न करने में बांटा है। सान्निध्य या प्राप्ति की इच्छा को भी उन्होंने सबसे अधिक संपर्क की इच्छा और अनेक के साथ रखने की इच्छा में बांटा है। शुक्ल जी ने सबका विस्तार से विवेचन किया है।

शुक्ल जी ने लोभ और प्रीति का सामाजिक-दृष्टियों से निदर्शन किया है। उन्होंने इसके लिए हास्य-व्यंग्य का सहारा भी लिया है। सभी उदाहरणों का स्पष्ट अर्थ है कि समाज, राजनीति, धर्म सभी में धन ही प्रमुख हो गया है और सभी क्षेत्र व्यवसाय बन गए हैं। इन सदर्भों से उन्होंने लोक-चेतना की भावना को स्पष्ट किया है।

शुक्ल जी का देश-प्रेम के संदर्भ में मानना है कि जो व्यक्ति देश की प्रकृति को नहीं जानता, उसके प्रति भावना नहीं रखता, उससे देश-प्रेम की बात करना व्यर्थ है। शुक्ल जी ने लोभियों के दमन की तुलना योगियों के दमन से की है, किंतु दोनों में अंतर है।

लोभ के कारण लोभी मान-अपमान, काम-क्रोध का दमन व्यक्तिगत हित के लिए करता है, किंतु योगी जन-कल्याण और स्व-कल्याण के लिए इंद्रियों का दमन करता है। उन्होंने अक्रोध, मानपमान समता, इन्द्रिय निग्रह के कारण लोभियों को धन्य कहा है और निष्ठुरता, निर्लज्जता, अविवेक, अन्याय आदि के लिए धिक्कारा है।

शुक्ल जी ने लोभ और प्रीति का भेद भी स्पष्ट किया है। देश के नदी, पर्वतों, पशु-पक्षियों आदि से प्रेम करने वाले भक्ति का प्रेम वास्तविक देश-प्रेम है। ऐसा व्यक्ति गरीबों और कमजोरी से भी प्रेम करता है। देश-प्रेम परिचय और सान्निध्य से ही संभव है। निकटता की इच्छा ही सान्निध्य का मूल है और यह इच्छा लोभ से पैदा होती है। ज्यादा से ज्यादा साथ रहने की इच्छा से प्रेम बढ़ता है, किंतु प्रेम परिचय के कारण होता है। शुक्ल जी ने लोभ का एक रूप बताया है–रक्षा का भाव, जिसके अंतर्गत देश प्रेम, घर प्रेम, पुर प्रेम आते हैं। ऐसे लोभ से मनुष्य महान बनता है। व्यक्ति को देश-प्रेम का लोभ सर्वस्व बलिदान करने के लिए प्रेरित करता है। लोभ तथा प्रेम सुख और आनंद की इच्छा के कारण उत्पन्न होते हैं, किंतु लोभ का अर्थ धन के लोभ तक सीमित है और यह निकृष्ट श्रेणी का लोभ है।

लोभ वस्तु के प्रति होता है और प्रेम व्यक्ति के प्रति। लोभ में हृदयता शामिल होने के कारण व्यक्ति के प्रति लोभ प्रेम की श्रेणी में आ जाता है। शुक्ल जी का मानना है कि प्रेमी तथा प्रिय के दिलों के जुड़ाव से जीवन में सजीवता और आनंद आते हैं, किंतु वियोग की स्थिति में यह आनंद बहुत कम हो जाता है। प्रेम से उपजी हृदयों की अभिन्नता जीवन की एकता है।

प्रेम का प्रभाव व्यक्ति और समाज दोनों पर होता है। व्यक्ति स्तर पर प्रभाव सीमित होने के कारण एकांतिक होता है। समाज के स्तर पर यह प्रभाव साहस, धीरता, दृढ़ता, कष्ट-सहिष्णुता आदि के कारण कर्त्तव्य एवं जनकल्याण बन जाता है। गोपियों का कृष्ण-प्रेम एकांतिक है और भक्ति में प्राय: एकांतिक प्रेम ही होता है।

लोक के प्रति प्रेम में कर्म का सौंदर्य, उत्साह और प्रफुल्लता भी है। इसमें प्रेमी कर्म के संघर्ष से अपने प्रिय के समक्ष कर्म के सौंदर्य को प्रस्तुत करता है। जब प्रेम दया के माध्यम से पैदा किया जाता है, तो सहानुभूति पैदा होती है। यह प्रेम की सामान्य प्रकृति है। एकपक्षीय प्रेम को भारतीय आचार्यों ने रस नहीं रसाभास माना है। प्रेम की उच्चतम सीमा प्रेम की पूर्णता के स्वरूप में कोई कमी नहीं रहती। प्रेम की यह स्थिति में प्रिय का कल्याण चाहती है। गोपियों का प्रेम भी ऐसा ही प्रेम है।

प्रेम के विशाल क्षेत्र में आनंददायी और दुखपूर्ण दोनों मनोविकार सम्मिलित हैं। शृंगार रस की दो अवस्थाएं न संयोग और वियोग शृंगार इसी के कारण हैं।

प्रश्न 7. 'सहस्र फणों के मणि-दीप' निबंध के कथ्य की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-146, 'सहस्र फणों के मणिदीप का कथ्य'

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) द्विवेदीयुगीन गद्य

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-10, प्रश्न 2

(ख) आत्मकथा और जीवनी

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-19, प्रश्न 16

(ग) प्रमोद की चारित्रिक विशेषताएँ

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-38, 'प्रमोद'

(घ) 'कुटज' निबंध की भाषा-शैली

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-137, 'भाषा-शैली'

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

हिंदी गद्य साहित्य

हिंदी गद्य का स्वरूप और विकास

हिंदी गद्य का विकास

1

परिचय

हिंदी साहित्य का इतिहास काफी पुराना है। ऐसा माना जाता है कि हिंदी साहित्य का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। हिंदी साहित्य के इतिहास को सामान्यत: चार भागों में बांटा जा सकता है–आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिक काल। हिंदी गद्य का विकास आधुनिक काल में हुआ। हिंदी गद्य के विकास में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा प्रेमचन्द का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आधुनिक काल से पूर्व का साहित्य अधिकांशत: पद्य में ही है। हिंदी गद्य के विकास में भारतेन्दु तथा प्रेमचन्द के अतिरिक्त अन्य लेखकों का भी योगदान रहा है।

प्रस्तुत अध्याय हिंदी गद्य के विकास से संबंधित है। अध्याय में निम्नलिखित विषयों की जानकारी दी गई है–गद्य साहित्य, हिंदी गद्य की पृष्ठभूमि, ब्रजभाषा गद्य, खड़ी बोली गद्य, हिंदी गद्य का विकास, हिंदी गद्य के विकास के कारण, प्रारंभिक गद्य लेखन, अंग्रेजों की भाषा नीति, भारतेन्दु युग (1875-1900), द्विवेदी युग (1900-1920) तथा प्रेमचन्द और उनके बाद।

अध्याय का विहंगावलोकन

गद्य साहित्य

साहित्यिक भाषा में कबीरदास, सूरदास तथा मीरा की रचनाओं को काव्य या पद्य कहा जाता है, जबकि उपन्यास, कहानी एवं निबंध को हम गद्य कह सकते हैं। काव्य में गेयता तथा लय होती है, जबकि गद्य की भाषा व्याकरण के अनुरूप होती है। काव्य रचना आरंभ से ही साहित्य का महत्त्वपूर्ण भाग रही है। भारत में जहां 'रामायण' और 'महाभारत' जैसे महाकाव्यों की रचना हुई, वहीं यूनान में 'इलियड' तथा 'औडेसी' जैसे महाकाव्यों की रचना हुई। नाटकों में भी काव्य की भाषा का ही अधिक प्रयोग हुआ है। प्रश्न यह उठता है कि आधुनिक युग से पूर्व साहित्यिक रचनाएं गद्य की बजाय पद्य में ही क्यों होती रहीं?

इसका कारण यह था कि काव्य को याद रखना अधिक सरल था और मौखिक परंपरा से साहित्य को आगे बढ़ाने में काव्य की भाषा अधिक सहायक थी।

हिंदी गद्य की पृष्ठभूमि

19वीं शताब्दी से पूर्व हिंदी भाषा में गद्य में रचनाएं अधिक नहीं थीं। 16वीं तथा 17वीं सदी में साहित्य में खड़ी बोली का प्रयोग बहुत कम हुआ, क्योंकि इस समय ब्रज भाषा साहित्य की भाषा थी। काफी समय तक साहित्य की रचना ब्रज भाषा में ही होती रही।

ब्रजभाषा गद्य

चूँकि ब्रजभाषा साहित्यिक भाषा थी, इसलिए इस भाषा के बोलचाल रूप का प्रयोग भी साहित्य में होता था। विद्वानों की भाषा जनसाधारण की भाषा से अलग होती है। जनसाधारण की भाषा बोलचाल की भाषा होती है। गद्य के द्वारा लेखक अपना संदेश जनता तक आसानी से पहुँचा सकता है। काव्य ग्रंथों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए टीकाएं लिखी गई हैं। ये टीकाएं भी गद्य में ही लिखी गई हैं। पद्य लेखन के साथ-साथ गद्य का लेखन भी होता रहा।

खड़ी बोली गद्य

खड़ी बोली जनसाधारण के बोलचाल की भाषा थी। धीरे-धीरे गद्य की रचनाएं भी इसमें होने लगीं। खड़ी बोली के विकास में तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का भी योगदान रहा। 14वीं शताब्दी में खड़ी बोली दिल्ली तथा उसके आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाने लगी थी। मुगलकाल में जनता से सम्पर्क साधने के लिए भी खड़ी बोली का ही उपयोग किया गया। मुगलों ने फारसी

www.neerajbooks.com

भाषा को राजकाज की भाषा बताया। खड़ी बोली तथा फारसी के मिश्रण से एक नई भाषा-शैली का जन्म हुआ। इस नई शैली को हिन्दवी या उर्दू नाम दिया गया। 14वीं शताब्दी में अमीर खुसरो ने खड़ी बोली में अनेक पहेलियों और मुकरियों की रचना की।

हिंदी गद्य का विकास

खड़ी बोली के विकास में परिस्थितियों, संस्थाओं तथा व्यक्तियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

हिंदी गद्य के विकास के कारण

अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना के साथ भारत में जो परिवर्तनों का सिलसिला प्रारंभ हुआ, उनमें से कुछ परिवर्तनों का संबंध हिंदी गद्य के विकास से भी है।

ईसाई मिशनरियाँ–अंग्रेजों के साथ भारत में ईसाई धर्म प्रचारक भी आये। अंग्रेजी शासन की स्थापना के साथ ईसाई धर्म प्रचारकों की गतिविधियां भी तेज हो गईं। 19वीं शताब्दी में ईसाई धर्म प्रचारकों ने ईसाई धर्म के प्रचार के लिए हिंदी गद्य में अनेक पुस्तकें तैयार करवाईं।

नवीन आविष्कार–भारत में अपने साम्राज्य को सुदृढ़ बनाने के लिए अंग्रेजों ने मुद्रण, यातायात तथा संचार के साधनों का प्रयोग किया। इनसे जनसामान्य के जीवन में बड़ा परिवर्तन आया।

शिक्षा का विस्तार–1935 से पूर्व भारत में शिक्षा संस्कृत और फारसी भाषा में दी जाती थी। राजा राममोहन राय ने अंग्रेजी शिक्षा का समर्थन किया। अंग्रेजी शिक्षा का भारतीयों को लाभ भी हुआ। अंग्रेजी शिक्षा से भारतीयों को पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति की जानकारी प्राप्त हुई, इससे भारतीयों में एक नई चेतना जाग्रत हुई।

समाज-सुधार आन्दोलन–सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए समाज सुधारकों ने जनता की भाषा में अपने मत का प्रचार किया। राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज के द्वारा अपने मत का प्रचार किया। स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'आर्य समाज' की स्थापना की। स्वामी दयानंद ने अपने ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना गद्य में ही की। श्रद्धाराम फिल्लौरी तथा नवीनचन्द्र राय ने भी समाज सुधार के लिए हिंदी गद्य का ही सहारा लिया।

हिंदी गद्य

पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन–पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन मुद्रण की सुविधा के कारण सरल हो गया। 'उदत मार्तंड' 1826 में पंडित जुगलकिशोर द्वारा प्रकाशित हिंदी का पहला समाचार-पत्र था। या साप्ताहिक पत्र था। इस पत्र से हिंदी गद्य में नवयुग आरम्भ हुआ। इसके बाद 1829 में 'बंगदूत' नामक पत्र कलकत्ता से निकलने लगा और 1834 में 'प्रजाहितैषी' नामक तीसरा पत्र प्रकाशित होने लगा। हिंदी भाषी क्षेत्र में पहला पत्र राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद' द्वारा प्रकाशित 'बनारस' था। इसके बाद अन्य अनेक पत्र प्रकाशित होते रहे।

प्रारम्भिक गद्य लेखन

1800 में कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हुई। 1803 में इसके हिंदी-उर्दू अध्यापक जॉन ग्रिलक्राइस्ट ने हिंदी और उर्दू की पुस्तकों के लेखन का प्रयास शुरू किया। उन्होंने कई भाषा-मुंशियों की नियुक्ति की।

भाषा मुंशी सदासुखलाल 'नियाज' उर्दू और फारसी के अच्छे लेखक और कवि थे। उन्होंने 'सुखसागर' की रचना की और विष्णु पुराण के आधार पर एक अपूर्ण ग्रन्थ भी रचा। इनकी भाषा सहज और स्वाभाविक है। 1798 और 1803 के बीच मुंशी इंशाअल्लाह खां ने 'उदयभान चरित' या रानी केतकी की कहानी' की रचना की। इनका संकल्प था कि इनकी भाषा अरबी, फारसी, तुर्की (बाहरी बोली), ब्रजभाषा, अवधी (गँवारी) और संस्कृत शब्दों के मेल (भाखापन) से मुक्त रखेंगे। इनकी वाक्य संरचना पर फारसी का स्पष्ट प्रभाव है।

लल्लूलाल जी ने भागवत के दशम स्कंध के आधार पर 'प्रेमसागर' रचा। इसकी भाषा ब्रजभाषा से प्रभावित है।

कहीं-कहीं अरबी-फारसी के शब्द भी प्रयोग किए हैं। पं. सदल मिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान' की रचना की। इनकी भाषा पर पूरबी बोली का प्रभाव अधिक दिखता है।

अंग्रेजों की भाषा नीति

अंग्रेजो के आगमन के बाद प्रशासन की भाषा फारसी के स्थान पर अंग्रेजी होने लगी। फारसी के प्रयोग में आम जनता की परेशानी देखते हुए 1836 में संयुक्त प्रान्त में अदालतों की भाषा हिंदी कर दी गई, किंतु विरोध के कारण 1837 में अदालतों की भाषा उर्दू कर दी गई।

राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद' शिक्षा विभाग में इंस्पेक्टर थे और हिंदी के पक्षधर थे। सरकारी विभागों में हिंदी को उर्दू की अपेक्षा गंवारू माना जाता था। सितारेहिंद ने ठेठ हिंदी का सहारा लिया और उसमे अरबी-फारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया। इन्होंने पाठ्यक्रम संबंधी पुस्तकें लिखने के साथ पंडित श्रीलाल और पंडित वंशीधर को भी पुस्तक-लेखन में लगाया। 'राजा भोज का सपना' कहानी सितारेहिंद की सरल और बोलचाल की हिंदी का उदाहरण है।

राजा लक्ष्मनसिंह ने हिंदी और उर्दू को दो अलग-अलग भाषाएँ माना। उन्होंने कालिदास के कई ग्रंथों का अनुवाद भी किया। इन्होने अपनी भाषा से हिंदी गद्य को समृद्ध किया। इन्होने संस्कृतनिष्ठ हिंदी को आगे बढ़ाया और 1841 में 'प्रजाहितैषी' नामक पत्र निकाला।

इनके बाद भारतेंदु ने युग प्रवर्तक की भूमिका निभाते हुए हिंदी गद्य को एक नई दिशा दी। हिंदी गद्य के विकास में पुस्तकें लिखकर और अंग्रेजी से अनुवाद कर रामप्रसाद त्रिपाठी, मथुराप्रसाद मिश्र, ब्रजवासी दास, बिहारीलाल चौबे, शिवशंकर, काशीनाथ खत्री, रामप्रसाद दुबे आदि ने योगदान दिया। स्वामी दयानंद के

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

'सत्यार्थ प्रकाश' को हिंदी में लिखने और आर्य समाज के सहयोग से पंजाब में हिंदी और संस्कृत को नया जीवन मिला। साथ ही नवीनचंद्र राय और श्रद्धाराम फिल्लौरी ने हिंदी को बढ़ाने, ईसाई धर्म का प्रभाव कम करने और धार्मिक व सामजिक जाग्रति फैलाने में सहयोग दिया।

भारतेंदु युग (1875-1900)

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म 2 सितम्बर, 1850 ई. को बनारस में हुआ था। इनके पिता गोपालचन्द्र साहित्य के प्रेमी थे। इन्होंने 'नहुष वध' नाटक की रचना की थी। अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतेन्दु ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। इन्होंने 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' तथा 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' नामक पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। भारतेन्दु ने खड़ी बोली के गद्य को परिमार्जित रूप में प्रस्तुत किया। निबंध, नाटक तथा समालोचना आदि में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने एक नयी परंपरा का सूत्रपात किया। इनकी रचनाएं शृंगार, देशभक्ति, ईश्वर-भक्ति तथा सामाजिक अवस्था को दर्शाती हैं। 35 वर्ष की अल्पायु में 1885 में उनकी मृत्यु हो गयी। भारतेन्दु 'निज भाषा' के विकास के पक्षधर थे।

इस काल में नाटक, निबंध तथा उपन्यास आदि विधाओं के प्रारंभ से हिंदी गद्य के विकास को पर्याप्त बल मिला। भारतेन्दु युग के लेखकों में कुछ कर गुजरने की ललक थी। भारतेन्दु युग में काव्य की भाषा ब्रजभाषा ही बनी रही।

द्विवेदी युग

भारतेंदु जैसे प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति के कारण हिंदी गद्य के विकास में गति आई। उनकी प्रेरणा से लेखकों की एक मंडली तैयार हो गई। इस मंडली के लेखों ने हिंदी गद्य को समृद्ध किया था। अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों ने भी हिंदी में लेखन कार्य किया था। हिंदी के प्रचार-प्रसार पर इस युग के लेखकों की दृष्टि अधिक थी, अत: इनकी भाषा में त्रुटियाँ नजर आती हैं। भारतेंदु मंडल के लेखकों में भी भाषागत दोष थे। भाषा बिगड़ने का एक और कारण हिंदी के उन पाठकों की संख्या बढ़ना था, जो अनूदित उपन्यास पढ़ने में रुचि रखते थे, लेकिन अन्य भाषाओं से हिंदी में अनुवाद करने वालों ने इस भाषा की अच्छी जानकारी प्राप्त करना आवश्यक नहीं समझा और उन्होंने शब्दकोश से अर्थ लगाकर ही अनुवाद का कार्य शुरू कर दिया। भाषा में व्याप्त इस अराजकता को अनुशासनबद्ध करने का महती कार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किया।

'सरस्वती' पत्रिका का योगदान

पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सन् 1900 में 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से भाषा के परिमार्जन का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। सन् 1903 से इसके संपादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी बनाए गए और वे द्विवेदी जी 'सरस्वती' पत्रिका के सन् 1920 तक संपादक रहे। 'सरस्वती' का हिंदी गद्य के विकास में ही नहीं आधुनिक हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में भी योगदान है। 'सरस्वती' को द्विवेदी जी के संपादन में सर्वाधिक प्रतिष्ठा मिली। द्विवेदी जी के संपादकत्व में 'सरस्वती' ने बीसवीं शती के आरंभिक दो दशकों के प्रतिनिधि साहित्य को प्रस्तुत करने हेतु मंच प्रदान किया। 'सरस्वती' ने ज्ञान-विज्ञान के नए-नए क्षेत्रों में प्रवेश कर हिंदी में भी जटिल-से-जटिल विषयों को प्रस्तुत करने की क्षमता को प्रमाणित किया। 'सरस्वती' ने हिंदी गद्य को गद्य की सभी विधाओं से संपन्न बनाने का महत्त्वपूर्ण प्रयत्न किया। 'सरस्वती' ने हिंदी गद्य को परिनिष्ठित रूप देकर अनगढ़पन और अराजकता को समाप्त कर एकरूपता प्रदान की। 'सरस्वती' ने हिंदी गद्य और पद्य की भाषा के द्वंद्व को समाप्त किया।

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी (1861-1938) स्वयं कवि थे, किंतु उन्हें कवि के रूप में उतनी प्रतिष्ठा नहीं मिली, जितनी अपने निबंध और समालोचनाओं के कारण मिली। द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' में प्रकाशन के लिए आने वाली रचनाओं की भाषाओं को सुधारकर परिमार्जित और एकरूप करने जैसा बड़ा कार्य किया। द्विवेदी जी भाषा के प्रति बहुत सजग रहते थे और उनकी कोशिश रहती थी कि खड़ी बोली हिंदी अपना मानक रूप ग्रहण करे। द्विवेदी जी ने उस युग की राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण की भावना को पूरी तरह आत्मसात कर उसे ही हिंदी साहित्य के लिए आदर्श मानते थे। उन्होंने साहित्य के रीतिकालीन भावबोध और कलारूपों को अस्वीकार किया और अपने युग और समाज के अनुकूल साहित्य रचने की प्रेरणा लेखकों में जगायी। उन्होंने साहित्य को समाज से जोड़ा। महावीरप्रसाद द्विवेदी की 'सरस्वती' के माध्यम से प्रेमचंद, मैथिलीशरण गुप्त, माधवप्रसाद मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, नाथूराम शर्मा 'शंकर', अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', रामचंद्र शुक्ल, पद्मसिंह शर्मा जैसे लेखकों को ख्याति मिली और जनता तक उनका महत्त्वपूर्ण साहित्य पहुँचा।

द्विवेदी युग में उपन्यास, कहानी, निबंध और आलोचना के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण काम हुआ। इसी युग में इन विधाओं का अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व बना और इसी स्वतंत्र व्यक्तित्व की नींव पर बाद में इन गद्य विधाओं ने महान् साहित्यकार और महान् रचनाएँ दीं।

प्रेमचंद और उनके बाद

द्विवेदी युग में भाषा के परिमार्जन का महत्त्वपूर्ण कार्य किया गया। द्विवेदी युग के बाद गद्य साहित्य को प्रेमचन्द ने एक नई दिशा दी। प्रेमचन्द के उपन्यासों तथा कहानियों में नवीनता दिखाई देती है। प्रेमचन्द ने उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध तथा जीवनियों के अतिरिक्त अनुवाद का कार्य भी किया। प्रेमचन्द ने लगभग 300 कहानियों की रचना की। प्रेमचन्द ने समाज एवं परिवार की किसी-न-किसी समस्या को ही अपनी कहानियों का आधार बनाया है। प्रेमचन्द की श्रेष्ठ कहानियां हैं–'ईदगाह', 'कफन', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'पूस की रात', 'बड़े घर की बेटी', 'पंचपरमेश्वर', 'नमक का दरोगा', 'दूध का दाम आदि। उपन्यास के क्षेत्र में अपनी उच्चकोटि की रचनाओं के कारण प्रेमचन्द को उपन्यास सम्राट कहा गया। 'गोदान', 'गबन', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', तथा 'निर्मला' उनके श्रेष्ठ उपन्यास हैं। प्रेमचन्द युग में तथा उसके

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

बाद भी उपन्यास-साहित्य को समृद्ध करने वाले उपन्यासकार थे–जयशंकर प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, विश्वंभरनाथ शर्मा, इलाचन्द्र जोशी, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, भगवतीचरण वर्मा, उपेन्द्रनाथ अश्क, जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल, नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा अमृतलाल नागर। इस युग में निबंध, आलोचना, नाटक आदि के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन एवं सुधार आए।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. आधुनिक काल से पूर्व साहित्य की रचना काव्य में होती थी। नीचे इसके विभिन्न कारण बताए गए हैं। सही कारण के सामने (√) का और गलत के आगे (×) निशान लगाइए–

(i) काव्य में गेयता होती है, इससे उसको याद रखना आसान होता है।
(ii) आधुनिक युग से पूर्व मुद्रण की आधुनिक प्रणाली का विकास नहीं हुआ था।
(iii) काव्य अभिव्यक्ति का सबसे अक्षम रूप है।
(iv) आधुनिक युग से पूर्व पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरंभ नहीं हुआ था।

उत्तर–*(i)* √, *(ii)* √, *(iii)* ×, *(iv)* √

प्रश्न 2. ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली को गद्य भाषा के रूप में स्वीकार किया गया, क्योंकि (सही विकल्प के सामने (√) का चिह्न लगाइए)।

(i) खड़ी बोली संपर्क भाषा के रूप में हिंदी क्षेत्र में व्यवहृत होने लगी थी।
(ii) ब्रजभाषा काव्य की भाषा थी।
(iii) पद्य और गद्य की भाषा अलग-अलग होती है।
(iv) खड़ी बोली को राज्याश्रय प्राप्त था।

उत्तर–*(i)* खड़ी बोली संपर्क भाषा के रूप में हिंदी क्षेत्र में व्यवहृत होने लगी थी।

प्रश्न 3. नीचे कुछ पुस्तकों के नाम दिए गए हैं, इनकी भाषा का नाम लिखिए।

(i) दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता
(ii) भाषा योग वासिष्ठ
(iii) अष्टयाम
(iv) चंद छंद बरनन की महिमा

उत्तर–*(i)* ब्रजभाषा, *(ii)* खड़ी बोली, *(iii)* ब्रजभाषा, *(iv)* खड़ी बोली।

प्रश्न 4. नीचे हिंदी गद्य के विकास के कुछ कारण बताए गए हैं, इनमें से एक कारण सही नहीं है, बताइए।

(i) ईसाई धर्म प्रचारकों का योगदान
(ii) मुद्रण प्रणाली की शुरुआत
(iii) अंग्रेज सरकार का विशेष संरक्षण
(iv) पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन

उत्तर–*(iii)* अंग्रेज सरकार का विशेष संरक्षण।

प्रश्न 5. राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद–

(i) उर्दू मिश्रित हिंदी के पक्षधर थे।
(ii) संस्कृतनिष्ठ हिंदी के पक्षधर थे।
(iii) ब्रजभाषा मिश्रित हिंदी के पक्षधर थे।
(iv) फारसी के पक्षधर थे।

उत्तर–*(i)* उर्दू मिश्रित हिंदी के पक्षधर थे।

प्रश्न 6. 'उदंत मार्तण्ड' के प्रकाशन का उद्देश्य था–

(i) अधिक धन कमाना
(ii) जनता की भाषा में जनता से संवाद बनाना
(iii) अंग्रेजी का विरोध करना
(iv) हिंदी साहित्य का प्रचार करना

उत्तर–*(ii)* जनता की भाषा में जनता से संवाद बनाना।

प्रश्न 7. निम्नलिखित लेखकों में से किसकी भाषा को आधुनिक हिंदी गद्य के सर्वाधिक नजदीक बताया गया है।

(i) इंशाअल्ला खां
(ii) मुंशी सदासुखलाल
(iii) लल्लूलाल
(iv) जॉन गिलक्राइस्ट

उत्तर–*(ii)* मुंशी सदासुखलाल।

प्रश्न 8. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर 'हां' या 'नहीं' में दीजिए।

(i) मुंशी सदासुखलाल फोर्ट विलियम कॉलेज से संबद्ध रहे। (हाँ/नहीं)
(ii) राजा लक्ष्मणसिंह संस्कृतनिष्ठ हिंदी के समर्थक थे। (हाँ/नहीं)
(iii) राजा शिवप्रसाद ने 'रघुवंश' का अनुवाद किया। (हाँ/नहीं)
(iv) श्रद्धाराम फुल्लौरी ने 'भाग्यवती' उपन्यास की रचना की। (हाँ/नहीं)

उत्तर–*(i)* नहीं, *(ii)* हाँ, *(iii)* नहीं, *(iv)* हाँ।

प्रश्न 9. भारतेंदु हरिश्चन्द्र के योगदान को व्यक्त करने वाली बातें नीचे के वाक्यों में कहीं गई है। उनमें से एक बात सही नहीं है, बताइए।

(i) भारतेंदु ने हिंदी गद्य को साहित्यिक संस्कार दिया।
(ii) भारतेंदु ने गद्य की नयी विधाओं में लेखन को प्रोत्साहित किया।
(iii) भारतेंदु ने लेखन को आधुनिक चेतना से जोड़ा।
(iv) भारतेंदु ने कई कहानियों की रचना की।

उत्तर–*(iv)* भारतेंदु ने कई कहानियों की रचना की।

प्रश्न 10. भारतेंदु युग के साहित्य की कुछ प्रमुख विशेषताएं नीचे बताई गई हैं उनमें से एक सही नहीं है, बताइए।

(i) इनमें समाज सुधार को प्रोत्साहित किया गया।
(ii) इनमें धार्मिकता का विरोध किया गया।

www.neerajbooks.com